International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 411-413

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 411-413
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2017
Accepted: 28-12-2017

डॉ० अंजू कुमारी
शिक्षिका, मध्यविद्यालय भोपट्टी, केवटी, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० अंजू कुमारी
शिक्षिका, मध्यविद्यालय भोपट्टी, केवटी, दरभंगा, बिहार, भारत

आधुनिकीकरण के परिपेक्ष्य में कामकाजी महिलाओं की स्थिति

डॉ० अंजू कुमारी

सारांशः
विकास की प्रक्रिया में निःसंदेह महिलाओं के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विश्व में आज बढ़ते विकास की प्रक्रिया को सतत् विकास के नाम से जाना जाता है। भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति से संबंधी समिति का मानना है कि समाज के विकास में महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानता, परिवार में स्थिति, सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में महिला और पुरूष दोनों को समान रूप से देखे जाने की आवश्यकता है। वर्ष 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में घोषित किया गया जिसका उद्देश्य विकास में महिला विकास को बढ़ावा देना और महिलाओं को अपने अधिकार के प्रति जागरूक करना है।

प्रस्तावनाः
विकास की प्रक्रिया में निःसंदेह महिलाओं के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विश्व में आज बढ़ते विकास की प्रक्रिया को सतत् विकास के नाम से जाना जाता हैं भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधी समिति का मानना है कि समाज के विकास में महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, परिवार में स्थिति, सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में महिला और पुरूष दोनों को समान रूप से देखे जाने की आवश्यकता हैं वर्ष 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में घोषित किया गया जिसका उद्देश्य विकास में महिला विकास को बढ़ावा देना और महिलाओं को अपने अधिकार के प्रति जागरूक करना था।

वर्तमान में विश्व का ऐसा कोई समाज नहीं है जिसके निर्माता उसे आधुनिक बनाने का प्रयास न कर रहे हों। समाजशास्त्र एवं अन्य समाजिक विज्ञानों में भी आधुनिकीकरण की अवधारणा पिछले कुछ दशकों से काफी लोकप्रिय हो गई। आधुनिकीकरण की अवधारणा नवीन नहीं है बल्कि यह तो सामाजिक परिवर्तन की पुरानी प्रक्रियाओं के लिए नवीन शब्द है, जहाँ कम विकसित देश उन विशेषताओं को अपनाते हैं, जो कि अच्छे विकसित देशों के लिए सामान्य है।

आधुनिकीकरण का आशय है, परम्परावादी विचारों, मान्यताओं, आदर्शों आदि को छोड़कर नवीन विचारों, मूल्यों, समानता, प्रजातांत्रिक, वैज्ञानिक, स्वतंत्रतावादी आदि आधुनिक मूल्यों को आत्मसात करना। इस प्रकार हम देखते हैं कि.. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया विश्व संस्कृति का प्रसार है जो उन्नत प्रविधि, ज्ञान, शिक्षा, विज्ञान, जीवन के बारे में विवेकपूर्ण दृष्टिकोण, सामाजिक सम्बन्धों के बारें में लौकिक विचारधारा, जनसम्बन्धी के लिए. न्याय की भावना के आधार पर, जिनका सम्बन्ध एक प्रकार के आधुनिक जीवन के लिए विकल्प के चयन से है, का चयन एवं इच्छाओं को समझना है।

भारत में आधुनिकीकरण का श्रीगणेश मूलतः ब्रिटिश शासन की स्थापना से हुआ माना जाता है। ब्रिटिश शासन के दौरान भारत के परम्परागत स्वरूपों में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया से जो परिवर्तन लाये गये उसी के परिणामस्वरुप भारत में नवीन आधुनिक मूल्यों की स्थापना का शुभारम्भ हुआ। स्वतंत्रता के बाद भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में अमेरिका, फ्रांस, जापान, जर्मनी आदि राष्ट्रों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण ही भारत में संचार साधनों, शिक्षा के प्रसार, नगरीकरण, औद्योगीकरण, परिवहन एवं आर्थिक तथा सामाजिक साझेदारी एवं सामाजिक गतिशीलता को बल मिला। आधुनिकीकरण की अवधारणा की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती। विभिन्न समाज वैज्ञानिकों ने आधुनिकीकरण की अवधारणा के बारे में अलग–अलग परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं. आधुनिकीकरण शब्द अंग्रेजी के ''माडर्न'' शब्द से बना है, जो स्वयं लैटिन भाषा के ''मोडो'' से बना है। मोडो का आशय है ''प्रचलन'' अर्थात जो कुछ चलन में है या प्रचलित है, वही आधुनिक है। इसी शब्द के आधार पर आधुनिकता, आधुनिकतावाद एवं आधुनिकीकरण आदि शब्दों की व्युत्पत्ति हुई। मानसिक गतिशीलता को आधुनिकीकरण की प्रमुख विशेषता माना जाता है। इसी आधार पर वैज्ञानिक भावना, संचार साधनों में क्रान्ति, नगरीकरण में वृद्धि, शिक्षा प्रसार, व्यापक आर्थिक साझेदारी अथवा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि,

राजनैतिक साझेदारी या मतदान व्यवहार एवं सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि को आधुनिकीकरण की विशेषताएँ माना जाता है। भारत में आधुनिकीकरण के स्थान पर पश्चिमीकरण के प्रयत्नों के प्रत्यय को अधिक उपयुक्त मानते हैं। भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने अनेक परिवर्तनों को जन्म दिया है।

भारत में परम्पराएँ परिवर्तन के प्रति स्वीकृत और समायोजन से प्रभावित है। परम्परागत व्यवहारों और विश्वासों के माध्यम से नये तरीकों को अपनाया जाता है, अर्थ दिये जाते हैं और उन्हें औचित्यपूर्ण बनाया जाता है। परम्परा नवीनताओं को रूप देने में सहायता करती है और बदले में स्वयं भी उन नवीनताओं से प्रभावित होती है। आधुनिक शहरी और औद्योगिक जीवन परम्परा को समाप्त नहीं करता। इसके विपरीत ये दोनों साथ–साथ चलते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार मानसिक एवं सामाजिक गतिशीलता के कारण लोगों के परम्परागत प्रतिबंध शिथिल होने लगते हैं एवं वे सामाजीकरण के नवीन प्रतिमानों को ग्रहण करके आधुनिकीकृत होने का प्रयास करते हैं। व्यक्तियों को आधुनिक बनने की यही प्रक्रिया आधुनिकीकरण कही जाती।

भूमिका को महत्वपूर्ण मानने वाले विद्वानों का विचार है कि एक व्यक्ति समाज में जो भूमिका निभाता है उससे उसका दृष्टिकोण प्रभावित होता हैं मध्यम वर्ग की स्त्रियां आज जो शिक्षित और नौकरी करने वाली स्त्रियों की भूमिका निभा रही हैं उससे उन्हे एक नया सामाजिक तथा आर्थिक दर्जा प्राप्त हुआ है तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उनका दृष्टिकोण भी प्रभावित हुआ हैं विवाह और परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण संस्थाएँ है और सामाजिक जीवन में जो परिवर्तन हो रहे है, उनसे बहुत हद तक प्रभावित है मैरिज एंड द वर्किंग विमेन इन इण्डिया (1970) तथा लव, मैरिज एंड सेक्स (1974) नामक अपने शोध अध्ययनों में प्रमिला कपूर ने पाया कि विभिन्न सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक कानूनी अधिकारों के मिलने से दृ भले ही सैद्धान्तिक रूप में ही सही–शहर की शिक्षित स्त्रियों का स्त्री तथा पत्नी के रूप में अपनी भूमिका तथा स्थान एवं पुरूष तथा पति के रूप में पति के उत्तरदायित्व एवं स्थान की ओर दृष्टिकोण बदलता जा रहा हैं दूसरे समाजशास्त्रियों के अध्ययनों से भी पता चलता है कि नौकरी करने वाली शिक्षित स्त्रियों का दृष्टिकोण, विशेषकर विवाह और परिवार के भीतर तथा बाहर के अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों की ओर बहुत कुछ बदल चुका हैंलेकिन क्या स्त्री के उत्तरदायित्व और दर्जे की ओर पुरूष वर्ग और समाज का भी दृष्टिकोण बदला है? क्या इस देश के संविधान और विभिन्न कानूनी और राजनैतिक अधिकारों ने सिद्धान्त रूप में स्त्रियों को जो सामाजिक दर्जा दिया है वह स्त्रियों को प्राप्य हो सका है? स्त्री के दृष्टिकोण मे जो परिवर्तन आये हैं क्या उसकी वजह से पुरूषों के साथ के उसके अन्तर्वयक्तिक सम्बन्धो में कटुता आई है? यदि ऐसा है तो परिवार के भीतर या बाहर उठने वाले संघर्षों एवं तनाव के क्या कारण हैं?

धीगड़ा (1972) के अनुसार लगभग आधी कामकाजी महिलायें नौकरी के साथ–साथ घरेलु उत्तरदायित्वों को तथा पत्नी की भूमिका को निभाने में कठिनाई का अनुभव करती हैं हार (1976) का अध्ययन भी घीगड़ा के निष्कर्ष की पुष्टि करता हैं प्रमिला कपूर (1974) का अध्ययन विशेष उल्लेखनीय है, क्योंकि भारत में कामकाजी महिलाओं पर किए गये अध्ययनों में कपूर का अध्ययन विशेष स्थान रखता हैं जो महिलायें विवाह के साथ कैरियर का चुनाव करती है वे नियमविहीनता छवतउंसमेदमेद्ध की स्थिति का सामना करती है और रोजगार के उदारी करण तथा परिवारीकरण का भी सामना उच्च स्तर पर करती हैं।

दासगुप्ता (1999) ने कामकाजी महिलाओं और भमिका संघर्ष संबंधी अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया है कि विवाह के पश्चात महिलायें पत्नी, मां तथा गृहणी की भूमिका निभाने के कारण सभी कार्यों के बीच समय का विभाजन ठीक–ठीक नही कर पाती है और उन्हें संघर्ष की गहन अनुभूति होती हैं।

मीरा देसाई का अध्ययन महिला के कामकाजी होने का उसके परिवार में भूमिका पर प्रभाव से संबंधित है अध्ययन में द्वितीय स्त्रोतों के आधार मानकर यह देखने का प्रयास किया गया है कि महिला के रोजगार का परिवार के भूमिका पर क्या प्रभाव पड़ता हैं अध्ययन यह दर्शाता है कि पति, बच्चे और परिवार महिलाओं की जिम्मेदारी माने जाने की सोच ने रोजगार की स्थिति में अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं को बढ़ाया हैं।

पारेक एवं मेहता (1999) का अध्ययन तीन वर्ग के कामकाजी महिलाओं से संबंधित रहा है जिसमें उन्होंने राजपत्रित अधिकारी, बैक के कर्मचारी और शिक्षिका तीन अलग–अलग प्रोफेशन से जुड़े कामकाजी महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया है कि पद के क्रम में तनाव व संघर्ष में अधिकता देखने को मिलती हैं सर्वाधिक संघर्ष और तनाव से पिड़ित महिलायें राजपत्रित अधिकारी थे जबकि महिला शिक्षिकाओं में सबसे कम भूमिका तनाव देखा गया।

गुटके एट. एल. (1981) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि अन्तर भूमिका संघर्ष उस स्थिति में और अधिक बढ़ जाती है जब परिवार अथवा कार्यरत संस्थान में से किसी भी भूमिका के कार्यो में वृद्धि होती हैं समान अवसर आयोग 2006 ने यह सुझाया है कि आज कामकाजी महिला अपने मातुत्व के आदर्श का निर्वाहन नही कर पाने के कारण स्वयं में अपराध बोध महसूस कर रही हैं बच्चों को पर्याप्त समय नही दे पा रही हैं इसी प्रकार के अध्ययन अमेरिका तथा ब्रिटेन के कामकाजी महिलाओं पर किये गये तथ्यों से भी ज्ञात हुआ हैं विकसित देशों की कामकाजी महिलायें भी बच्चो को समय दे पाने में सफल नहीं हैं।

भण्डारी (2004) के अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि दोहरी भूमिका के कारण कामकाजी महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता प्रभवित होती है उन्हें घर और परिवार और कार्यालय दोनों का उत्तरदायित्वों को निर्वाहन करना होता हैं परिणामतः वे कही न कही अपने जीवन की कुछ महत्वपूर्ण लम्हों को छोड़ जाते है (छोड़ना पड़ जाता है)

अनेक विद्वानों द्वारा किये गये अध्ययनों से जाहिर होता है कि अधिकांश पति पत्नी द्वारा नौकरी करने की वजह से पारिवारिक जीवन में आई हुई तबदीली को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं अपने अध्ययन के दौरान प्रमिला कपूर (1974) ने पाया कि अधिकांश पति यह तो चाहते हैं कि पारिवारिक आय में वृद्धि के लिए उनकी पत्नियां नौकरी करें परन्तु साथ ही साथ वे (पति) घरदृबार के काम में हाथ बांटने तथा बच्चों की देखभाल करने के लिए कतई तैणर नहीं थें यह माना जाता है कि यह काम तो पत्नी का ही है, भले ही वह पति के ही जैसी नौकरी क्यों न करती हो यद्यपि अधिकांश कामकाजी स्त्रियां अपने इस दुहरे उत्तरादायित्व को निभाने के लिए तैयार है, परन्तु उन्हें अपने पतियों से इस काम मे शायद ही कोई सहयोग मिलता है। कपूर, 1970 धींगड़ा ने भी अपने अध्ययन में यही पाया थां अधिकांश स्त्रियों ने उसे बताया था कि उनके पति लापरवाह है तथा "प्रायः ऐसा चाहते हैं कि उनकी पत्नियां परम्परागत रीति के अनुसार उनके वश में रहें तथा नौकरी के बावजूद भी वे ही घरदृबार की चिन्ता करें'' हालांकि वे इस बात को मानने के लिए तैयार हैं कि पत्नियाँ नौकरी करे तथा उन्हें पुरूषों के समान अधिकार मिलने चाहिएं कामकाजी महिलायें भी यही समझती हैं कि अपनी नौकरी के द्वारा अपने पारिवारिक जीवन मे कोई कमी, परिवर्तन तथा रूपान्तर लाये बिना ही वे महत्वपूर्ण कार्यकर्ता की भूमिका निभा रही हैं।

कांशीनाथ (2000) के अध्ययन में यह पाया गया है कि परिवार के वातावरण एवं कार्य विभाजन की स्थिति का कामकाजी महिला के व्यक्ति्व पर गहरा प्रभाव पड़ता हैं इसी प्रकार मौसमी दत्त (1998) ने पश्चिम बंगाल के कलकत्ता के मध्यम वर्गीय महिलाओं के

अध्ययन में घरेलू कार्य विभाजन का कामकाजी महिला पर प्रभाव का अध्ययन किया हैं अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व अपनी उत्पत्ति काल से ही अस्तित्व व पहचान के लिए संघर्षरत दलित समुदाय में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन प्रासंगिक प्रतीत होता है क्योंकि एक ओर जहां हम महिला सशक्तीकरण की बात करते है, वहीं समाज में अस्पृश्यता और अनेक सामाजिक कुरीतियाँ जाति को लेकर प्रचलित है, ऐसे में संवैधानिक प्रावधानों के बाद भी अनुसूचित जाति के साथ–साथ इस वर्ग के कामकाजी महिलाओं की परिवार और समाज में स्थिति का अध्ययन समसामयिक प्रतीत होता हैं।

यदि हम उपनिवेशकालीन भारतीय समाज पर नजर डालें तो यह पाएंगे कि दलित समाज सबसे ज्यादा शोषित और उपेक्षित रहा हैं इसका उल्लेख न केवल विभिन्न धर्म ग्रन्थों से मिलता है, वरन आधुनिक साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता हैं भीमराव अंबेडकर जिन्हें हम भारतीय संविधान निर्माता के नाम से भी जानते हैं उन्हे भी सभ्य सुशिक्षित होने के बाद भी जीवनभर सवर्ण सामाजिक व्यवस्था में उपेक्षा ही मिलती रहीं उन्होने अपनी पीड़ा को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया, जो कि इस बात का प्रमाण है कि भारतीय जाति व्यवस्था में दलित सबसे निम्न स्थिति में रहा हैं उन पर तमाम तरह की वर्जनाएं थोपी जाती रही है जैसे वे सार्वजनिक स्थलों पर धूम–फिर नहीं सकते, मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते, सार्वजनिक उपयोग की वस्तुओं पर भी उनका अधिकार सबसे अंत में आता है, सामाजिक आयोजनों से इन्हे पृथक रखा जाता था। इनकी अपनी अलग बस्ती अनेक परंपरागत गांवों में आज भी देखी जा सकती हैं उन्हें राजनीतिक सहभागिता, धार्मिक सहभागिता का अधिकार नहीं होता थां योग्य होने के बाद भी भारतीय जाति व्यवस्था में दलितों पर अनेक प्रकार की निर्योग्यताएं थोपी जाती रही हैं जिसके कुछ उदाहरण हमें आज भी देखने को मिल सकता हैं।

प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास आय का अन्य कोई स्त्रोत नहीं है जबकि 38.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास नौकरी के अलावा आय का अन्य स्त्रोत भी हैं जिसमें ट्यूशन पढ़ाना, किराना दुकान, सिलाई कडाई करना तथा कृषि कार्य प्रमुख हैं स्पष्टरू देखने को मिला है कि वर्तमान समय में महिलाओं में आर्थिक संबलता का बोध बढ़ रहा हैं यह महिला संस्कृतिकरण का एक अंग हैं

निष्कर्षः

आधुनिकता से प्रभावित अधिकांश वही महिलाएँ हैं जो सामाजिक शक्ति संरचना में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इसमें पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति की महिलाएँ अपेक्षाकृत कम क्रियाशील हैं। इसी प्रकार आयगत स्थिति के आधार पर वही मुस्लिम महिला आधुनिकता से अधिक प्रभावित हैं जो उच्च आय वाली हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर में भारत में नारी की स्थिति बेहतर हुई है। आज राजनीति से लेकर टेक्नोलॉजी तक सभी क्षेत्रों में स्त्रियाँ अपनी सक्रिय एवं सफल उपस्थिति का एहसास करा रही हैं। सबसे उल्लेखनीय और सुखद बात यह है कि महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति चेतना निरन्तर प्रखर हो रही है जिसके फलस्वरूप उनके प्रति समाज के दृष्टिकोण में रचनात्मक बदलाव दिखाई देने लगा है। महिलाओं की शिक्षा को अशुभ मानने वाला समाज अब लड़कियों की शिक्षा की अनिवार्यता तथा महत्ता को स्वीकार करने लगा है। राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन भारतीय महिलाओं की चेतना का ज्वलंत उदाहरण है। पंचायतों और नगरपालिकाओं में तीस प्रतिशत आरक्षण के बाद संसद और विधान सभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई स्थान सुरक्षित करने के विधेयक का लोकसभा में प्रस्तुतीकरण और उसे पारित कराने के लिए महिलाओं का संघर्ष इस दिशा में एक ठोस प्रगतिशील कदम है।

संदर्भ सूचीः

1. ''मैरिज एण्ड द विकिंग वुमन इन इण्डिया'' दिल्ली विकास पब्लिकेशन 1970.
2. ''कल्चरल कांट्रेडिक्शन्स एण्ड सेक्स रोल्स'' अमेरिका जमर्नल ऑफ सोशियोलाजी वर्ष 52
3. Changing status of the working woman in India, Vikash publishing house new Delhi 1974
4. ''द वर्किंग वीमेन'' द पोजिशन आफ विमन इन इण्डिया बम्बई 1973
5. चेन्जिग स्टेटस ऑफ द वर्किंग वुमेन इन इण्डिया विकास पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली, 1974
6. जर्नल ऑफ इण्डिया एकेडमी ऑफ सोसल साइकोलाजी 1999
7. वुमेनस इम्प्लारमेण्ट एण्ड देयर केनिलियल रोल इन इण्डिया 1996
8. Role Strerr Among Working Women, New Delhi 1997-
9. Women I two work Roles and the Quality of their life 2004
10. ''वीमन वर्कर्स इन इण्डिया'' बम्बई एशिया पब्लिकेशन हाऊस 1960
11. वीमन एण्ड एम्प्लाइमेण्ट बम्बई टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साईसिंग 1970
12. मैरिज एण्ड द वर्किंग वुमन इन इण्डिया 1970
13. ''चेंजिंग स्टेट्स ऑफ द वर्किंग वुमेन इन इण्डिया'' 1974